हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह का नाम गौरव पाये।

यह एस्ता की पुस्तक का आगे बढ़ता हुआ हिस्सा है। इन तीन अध्यायों (5, 6 और 7) में हम देखते हैं कि रानी एस्ता राजा के सामने बिना अनुमति के जाती है ताकि अपने लोगों के लिए प्रार्थना करे, उनके दुश्मन हमान के खिलाफ जो यहूदियों को पूरी दुनिया से नष्ट करने की योजना बना चुका था। लेकिन एस्ता को उसकी इच्छा के विपरीत मार नहीं डाला गया; बल्कि राजा ने उसे अपनी जरूरतें प्रस्तुत करने की अनुमति दी। जब राजा ने उसकी इच्छा पूछी, तो एस्ता तुरंत जवाब नहीं देती बल्कि पहले उसने राजा और उसके दुश्मन हमान के लिए एक भोज आयोजित किया।

एस्ता 5:2-5

“जब राजा ने रानी एस्ता को यार्डन में खड़ा देखा, तो वह उसकी ओर प्रसन्न हुआ। उसने हाथ में स्वर्ण की छड़ी बढ़ाई, और
एस्ता ने छड़ी का किनारा छू लिया।
राजा ने कहा, ‘रानी एस्ता, तुम्हारी क्या इच्छा है? तुम्हारी क्या मांग है? तुम्हें आधा राज्य भी दिया जाएगा।’
एस्ता ने कहा, ‘यदि यह राजा को अच्छा लगे, तो वह आज राजा और हमान, दोनों को मेरे द्वारा आयोजित भोज में आमंत्रित करें।’ राजा ने कहा, ‘तुरंत ऐसा करो जैसा एस्ता ने कहा।’ इस प्रकार राजा और हमान एस्ता द्वारा आयोजित भोज में आए।”

राजा एस्ता के भोज से बहुत प्रसन्न हुआ और फिर से पूछा कि उसकी क्या आवश्यकता है। लेकिन एस्ता ने राजा को सीधे नहीं बताया; उसने एक और शानदार भोज आयोजित किया। जब राजा ने वहाँ आनंदपूर्वक भोजन किया, उसने फिर एस्ता से उसकी हृदय की इच्छा पूछी।

एस्ता 7:2-10

“दूसरे दिन राजा ने एस्ता से शराब भोज में कहा, ‘रानी एस्ता, तुम्हारी प्रार्थना क्या है? तुम्हारी इच्छा क्या है? तुम्हें आधा राज्य भी दिया जाएगा।’
एस्ता ने उत्तर दिया, ‘यदि मुझे राजा की दृष्टि में
प्रसन्नता मिली है, तो मेरी प्रार्थना मेरे जीवन के लिए हो और मेरे लोगों की आवश्यकता के लिए हो।
क्योंकि हम, मैं और मेरा लोग, नष्ट किए जाने के लिए बेच दिए गए हैं। यदि हम केवल दास और दासी होते, तो मैं चुप रहती, पर हमारी विनाश की योजना राजा के नुकसान के बराबर नहीं है।’ राजा अहशवेरोश ने पूछा, ‘यह कौन है और कहाँ है जिसने ऐसा हृदय रखा?’
एस्ता ने कहा, ‘यह वही हमान है, जो दुश्मन और अत्यंत दुष्ट है।’
हमान डर के मारे राजा और रानी के सामने खड़ा हो गया। राजा क्रोध में बगीचे में गया और जब लौटकर आया, तो देखा कि हमान एस्ता के सामने फर्श पर गिरा है। राजा ने कहा, ‘क्या यह मेरे

घर में रानी के सामने इस तरह की नापाकी करेगा?’ और फिर उसे मृत्युदंड दिया गया।
इसके बाद हमान को वही वृक्ष पर लटका दिया, जिसे उसने मर्देखई
के लिए तैयार किया था। राजा का क्रोध शांत हुआ।”

सीख और प्रेरणा
एस्ता मसीह के दुल्हन की तरह है। यह हमें सिखाता है कि जब हम अपने राजा (यानी हमारे प्रभु यीशु) के सामने अपनी जरूरतों के साथ आते हैं, तो हमें बुद्धिमानी और धैर्य के साथ आना चाहिए। एस्ता ने राजा को प्रसन्न करने के लिए पहले दो भव्य भोज आयोजित किए और बाद में अपनी वास्तविक जरूरत प्रस्तुत की।

इसी प्रकार, जब हम परमेश्वर के पास आते हैं, तो पहले उसे प्रसन्न करने वाला कार्य करें—जैसे:

उसकी सेवा में स्वयं को समर्पित करना

भेंट अर्पित करना (आर्थिक या समय की)

जरूरतमंदों की मदद करना, अनाथों और गरीबों के लिए कार्य करना

लोगों को ईश्वर की ओर आकर्षित करना

दूसरों के लिए प्रार्थना करना

फिर अपनी व्यक्तिगत जरूरतें प्रस्तुत करें। याद रखें, बाइबल कहती है कि परमेश्वर हमारी जरूरतों को तब तक भी जानता है जब हम उसे नहीं मांगते। (मत्ती 6:8)

एस्ता ने केवल अपने लिए प्रार्थना नहीं की, बल्कि अपने लोगों के लिए भी की। इसी प्रकार हमें भी अपने भाइयों और चर्च के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। जैसा कि दानिय्येल ने इस्राएल के लोगों के लिए प्रार्थना की, और प्रभु ने उसे सुना। हमारे प्रभु यीशु ने भी हमेशा हमारे लिए प्रार्थना की। हमें भी दूसरों की कमजोरियों को उठाना चाहिए। (गलातियों 6:2)

बाइबल कहती है कि न्याय परमेश्वर के हाथ में है। हमान ने मर्देखई के लिए जो वृक्ष तैयार किया था, उसी पर खुद लटका। जैसा हम बीज बोते हैं, वही फल हम काटते हैं। (नीतिवचन 26:27)

धर्महीनता का आनंद अस्थायी है। यह हमें धोखा देती है। सफलता और सम्मान हमें अहंकारी बना सकता है, परंतु परमेश्वर की वचन सत्य है।

आह्वान
पाप से पलटकर प्रभु यीशु मसीह के नाम पर सही बपतिस्मा लें और

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

अपने पापों का क्षमादान प्राप्त करें।

आशीर्वाद

आप यह शिक्षा व्हाट्सएप पर भी प्राप्त कर सकते हैं। हमारे चैनल में जुड़ने के लिए यहाँ क्लिक करें >> WHATSAPP

संपर्क/प्रार्थना/पूजा कार्यक्रम/सवाल:
+255693036618 / +255789001312

अगला अध्याय >>>> एस्ता: अध्याय 8, 9 & 10 (पुरिम उत्सव)

Mafundisho mengine:

Share on:
WhatsApp